

डॉ. डेविड हावर्ड, जोशुआ-रूथ, सत्र 4, जोशुआ 1:1-9

© 2024 डेविड हॉवर्ड और टेड हिल्डेब्रांट

यह रूथ के माध्यम से जोशुआ पर अपनी शिक्षा में डॉ. डेविड हॉवर्ड हैं। यह सत्र संख्या चार, जोशुआ अध्याय एक, श्लोक एक से नौ तक है।

ठीक है। इस आने वाले खंड में, हम वास्तव में जोशुआ की पुस्तक को देखना शुरू करने जा रहे हैं और मैं आपको एक संलग्न दस्तावेज़ का उल्लेख करना चाहता हूँ जो आपके लिए उपलब्ध होगा, जो कि पुस्तक की मेरी रूपरेखा है। और यदि आप इसे देखते हैं, तो जब हम इस पर चर्चा कर रहे होंगे तो इससे आपको इसे बाहर निकालने में मदद मिल सकती है। लेकिन अगर आप मेरी रूपरेखा को देखें, तो आप देखेंगे कि मैं पुस्तक को चार प्रमुख खंडों में देखता हूँ, अध्याय एक से पांच, छह से 12, 13 से 21 और 22 से 24।

और उन चार खंडों के लिए मेरे लेबल में, मैंने प्रत्येक बिंदु में विरासत या विरासत शब्द को शामिल किया है। तो, यह उस पुस्तक के विषय पर वापस जाता है जिसका मैंने एक अन्य खंड में उल्लेख किया है जहां मुझे लगता है कि यह सब विरासत का हिस्सा है। मैं यहां बस एक कोष्ठक में शब्द कहूंगा कि मैंने पुराने नियम की ऐतिहासिक पुस्तकों पर एक पाठ्यपुस्तक जल्दी प्रकाशित की थी।

मेरे पास जोशुआ पर एक अध्याय था और उस अध्याय में, मेरे पास पुस्तक की रूपरेखा थी। उस समय, मेरी रूपरेखा पहले खंड में तीन-बिंदु वाली रूपरेखा थी, जिसका शीर्षक भूमि पर विजय के प्रभाव से कुछ था। और फिर कुछ साल बाद, मुझे यह कमेंट्री करने के लिए कहा गया।

जैसे-जैसे मैंने किताब को गहराई से खोजा, मुझे एहसास हुआ कि विजय का विचार शायद थोड़ा भ्रामक है, जैसा कि मैंने पहले खंडों में उल्लेख किया है। और मुझे लगता है कि यह अधिक हद तक ईश्वर द्वारा भूमि और विरासत इत्यादि देना है। और फिर वास्तव में विजय अध्याय छह तक शुरू नहीं होती है।

इसलिए, मैं पहले पांच अध्यायों को इसकी तैयारी के रूप में देखता हूँ। और इसलिए, मेरी टिप्पणी में, मेरे पास वे चार खंड थे जिनका मैंने अभी उल्लेख किया है। और इसलिए, जिस तरह से मैं जोशुआ की किताब को देखता हूँ, मैं प्रिंट में खुद का खंडन कर रहा हूँ।

लेकिन यह बाद का संस्करण है जिसके साथ मैं इस बिंदु पर जा रहा हूँ। और मुझे लगता है कि मैंने जानबूझकर प्रमुख शीर्षकों में शब्द विजय से बचने की कोशिश की है ताकि मैं उस पर फिर से जोर दे सकूँ जिसे मैं पुस्तक में एक अधिक महत्वपूर्ण विषय मुद्दे के रूप में देखता हूँ। तो चलिए पहले खंड के बारे में बात करते हैं, जिसे मैं अध्याय एक से पांच तक के रूप में देखूंगा।

और मैं इसे भूमि विरासत की तैयारी कहूंगा। और इज़राइल इस महान उद्यम में आने वाला है। यह कनान की भूमि में प्रवेश करता है और सदियों से इसका वादा किया गया था।

पेंटाटेच बार-बार इसकी ओर इशारा करता है। और अब आखिरकार समय आ गया है कि लोग भूमि में प्रवेश करें। यह दूसरी पीढ़ी है।

वे बच्चे जो मिस्र से बाहर आने पर पैदा नहीं हुए थे या जो उस समय कम उम्र के थे। तो, यह एक नया दिन है। और पहली तैयारी स्वयं नेता, जोशुआ की तैयारी थी।

और अध्याय एक में, हमारे पास यहोशू को परमेश्वर का आदेश है, जिसमें उसे मजबूत, साहसी, आदि होने के लिए कहा गया है। और फिर हमारे पास जनजातियों की तैयारी और जॉर्डन नदी को पार करने के लिए तैयार होने के निर्देश हैं। अध्याय दो में राहाब की कहानी हमें दिखाती है कि कनानी लोग कब्ज़ा करने के लिए तैयार थे।

उसने और अन्य लोगों ने इस्राएलियों के बारे में सुना था और वे डर गए थे। यह भी, स्वयं राहाब, चरित्र, महिला, एक सच्चे आस्तिक का एक चमकदार उदाहरण है। मूलतः एक कनानी धर्मातरित और उसके जीवन में ईश्वर की कृपा।

अध्याय तीन और चार जॉर्डन नदी को पार करना हैं। अध्याय तीन, वास्तविक क्रॉसिंग की ओर देखता है। और वहां दो चीजें हैं।

सन्दूक के साथ भगवान की उपस्थिति पर जोर। और फिर पानी के खड़े होने और पानी के रुकने का वास्तविक चमत्कार। यह इतनी बड़ी घटना है कि अध्याय चार का पूरा भाग उस पर पीछे मुड़कर देखने, स्मारक पत्थरों के निर्माण और उसे उजागर करने के लिए समर्पित है।

और फिर अध्याय पाँच, मैं देखता हूँ, पवित्रता को समर्पित अध्याय है। इससे पहले कि वे वास्तव में पहली बार शामिल हों, भगवान के साथ सही हो जाएं। पहली लड़ाई में।

तो यह वहां एक तरह का सिंहावलोकन है। और जैसा कि कहा गया है, अब हम वास्तव में अध्याय एक पर विचार शुरू करना चाहते हैं। इसलिए, यदि आपके पास बाइबिल है, तो कृपया पहला अध्याय खोलें।

और अध्याय का पहला भाग, निस्संदेह, श्लोक एक से नौ तक यहोशू को दिया गया परमेश्वर का आदेश है। तो, आइए अभी उन पर ध्यान केंद्रित करें। और हमने इस खंड के परिचय को श्लोक एक के साथ देखा है।

मंच तैयार करता है। यह यहां एक कथा है, एक अर्थ में, एक कथात्मक ढांचा है। यहां यह पूरा अध्याय संवाद या भाषणों के आसपास बनाया गया है।

यहोशू को दिए गए परमेश्वर के भाषण, लोगों को यहोशू के निर्देश, लोगों की प्रतिक्रिया, इत्यादि। तो, अध्याय एक, पद एक, यहोवा के सेवक मूसा की मृत्यु के बाद, यहोवा ने नून के पुत्र यहोशू, जो मूसा का सहायक था, से कहा। और हमने पहले देखा है कि इस तरह से उत्तराधिकारी के

रूप में मूसा की स्थिति पर प्रकाश डाला गया है, लेकिन अभी तक वह बिल्कुल योग्य उत्तराधिकारी नहीं है।

वह केवल मूसा की सहायता या सहायक है। और तब परमेश्वर कहता है, श्लोक दो और उसके बाद, मूसा, मेरा सेवक, मर गया है। इसलिये उठो, यरदन तक चलो।

तुम्हें और उस देश के सभी लोगों को जो मैं उन्हें दे रहा हूँ। मैं अंग्रेजी मानक संस्करण पढ़ रहा हूँ, जो भूमि मैं दे रहा हूँ। कुछ अन्य संस्करणों में वह भूमि पढ़ी गई है जो मैं उन्हें देने वाला हूँ।

यदि आप हिब्रू जानते हैं, तो यह देना क्रिया का सहभागी रूप है। और इसका मतलब यह है कि यह भूमि अभी तक पूरी नहीं हुई है। मैं प्रक्रिया में हूँ।

यह एक दिलचस्प बात है क्योंकि अगले श्लोक में यह हमें क्रिया का एक अलग रूप देता है। श्लोक तीन में कहा गया है, कि जिस जिस स्थान पर तुम्हारे पांव पड़ेंगे, वह सब मैं ने तुम्हें दे दिया है। और वहां क्रिया है, यदि आप हिब्रू जानते हैं, तो यह पूर्ण है, यह अतीत, पूर्ण क्रिया है।

एनआईवी, दुर्भाग्य से, और शायद अन्य संस्करण भी, दुर्भाग्य से, श्लोक तीन में पढ़ता है, भगवान, मैं, वह भूमि जो मैं देने वाला हूँ या मैं दे रहा हूँ, मैं बिल्कुल भूल जाता हूँ। लेकिन यह एनआईवी में क्रिया रूप में परिवर्तन का पालन नहीं करता है जिस तरह से हिब्रू में होता है। और मुझे लगता है कि हिब्रू हमें यह बताने की कोशिश कर रहा है कि चाहे आप इसे कैसे भी देखें, ईश्वर भूमि दे रहा है।

और एक स्तर से, जाहिर है, वह इसे देने की प्रक्रिया में है। वे अभी तक जमीन पर भी नहीं हैं। वे जॉर्डन के पूर्व में हैं।

वे अभी तक पश्चिम में नहीं आये हैं। वे वहां नहीं हैं। उन्होंने इसे नहीं लिया है।

तो, भगवान प्रक्रिया में है या भगवान उन्हें देने वाला है। इस प्रकार आप कृदंत का अनुवाद करते हैं। लेकिन दूसरे दृष्टिकोण से, ज़मीन पहले से ही उनकी है।

इस पर उनका कानूनी अधिकार है। यह ऐसा है मानो यह एक सौदा हो गया है। वस्तुतः, आप कह सकते हैं कि यह इब्राहीम के समय से ही उनका था।

परमेश्वर ने कहा है कि यह तुम्हारी भूमि है। और इसलिए, अब आपको बस इसे प्राप्त करने के लिए जाना है। लेकिन यह पहले से ही आपका है।

तो, मैंने तुम्हें पहले ही जमीन दे दी है। और इसलिए इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप इसे इस परिप्रेक्ष्य से कैसे देखते हैं कि यह एक प्रक्रियाधीन चीज़ है या यह एक सौदा हो चुका है, यही एक कारण है कि मुझे लगता है कि आप पुस्तक में भूमि का उपहार देने को एक महत्वपूर्ण विषय के रूप में देखते हैं। नातान शब्द, जो देना शब्द है, पुस्तक में दर्जनों बार आता है, हमेशा ईश्वर द्वारा इसराइल को भूमि देने के संदर्भ में।

और इसे यहीं यहोशू को दिए गए परमेश्वर के आदेश के पहले कुछ छंदों में उजागर किया गया है। आगे बढ़ते हुए, पद चार कहता है, इस लबानोन के जंगल से लेकर महानद, परात महानद तक, हित्तियों का सारा देश, बड़े समुद्र तक, सूर्य की ओर, तेरा भाग ठहरेगा। मैंने हमारे पास पहले मौजूद मानचित्र को देखा है।

यह भूमि आज इजराइल की संपूर्ण भूमि है और सीरिया से लेकर महान नदी, फरात नदी तक, पेंटाटेच के अन्य हिस्सों तक है। यह हमें मिस्र की नदी तक, मिस्र की सीमा तक बताता है। और यह सब मानचित्र की तरह है, भौगोलिक मानचित्र जिसे यहोशू भगवान यहोशू के लिए चित्रित कर रहा है।

यह वह भूमि है जो उन्हें मिलनी है। अब, इसमें फरात नदी का उल्लेख है, और यह उत्तर-पूर्व का एक लंबा रास्ता है। और हमारे पास अब तक इसराइल के वास्तव में भौतिक रूप से भूमि पर रहने का कोई रिकॉर्ड नहीं है।

वह अराम की भूमि से होकर, सीरिया से होकर है। और सुलैमान के दिनों में, इस्राएल का प्रभाव निश्चित रूप से इतनी दूर तक फैला हुआ था। और शायद इसी तरह हम इसे समझ सकते हैं।

फिर पद पाँच में कहा गया है, तेरे जीवन भर कोई तेरे साम्हने खड़ा न रह सकेगा, जैसे मैं मूसा के संग था, वैसे ही तेरे संग रहूँगा। मैं तुम्हें छोड़ूँगा नहीं, त्यागूँगा। तो यहाँ कनानी लोगों द्वारा उनका सामना करने में सक्षम नहीं होने का संदर्भ दिया गया है।

और फिर दूसरी बात, परमेश्वर की अपनी उपस्थिति का वादा। जैसे मैं मूसा के साथ था, वैसे ही तुम्हारे साथ भी रहूँगा। मैं तुम्हें छोड़ूँगा नहीं, त्यागूँगा।

यह विचार, मैं तुम्हारे साथ रहूँगा का संदर्भ, फिर से भगवान और उसके लोगों, इस मामले में, नेता के बीच संबंध का संदर्भ है। लेकिन फिर उन लोगों के साथ विस्तार से जिनका वह नेतृत्व कर रहे हैं। यह फिर से, इब्राहीम से किए गए परमेश्वर के वादों तक जाता है।

भगवान कहते हैं कि मैं तुम्हारा भगवान बनूँगा, तुम मेरे लोग बनोगे, मैं तुम्हारे साथ रहूँगा, इत्यादि। तो यह एक मुहावरा है। शब्द या वचन जो हमें पूरे पुराने नियम में बार-बार मिलते हैं। मूसा को, यशायाह, यिर्मयाह, डेविड इत्यादि जैसे लोगों को।

छंद छह से नौ शायद यहोशू को दिए गए परमेश्वर के भाषण का दूसरा भाग है। और जो चीज़ यहाँ हावी है वह है मजबूत और साहसी बनने की आज्ञा। हमारे पास वह छंद छह और सात और छंद नौ में है।

और दिलचस्प बात यह है कि हम देखते हैं कि यहाँ एक प्रकार की ब्रैकेटिंग है। छंद छह से नौ तक, यह कहता है कि मजबूत और साहसी बनो। और श्लोक सात कहता है, मजबूत और बहुत साहसी बनो।

और यह, एक तरह से, छंद सात और आठ में जो कहा गया है उस पर प्रकाश डालता है। तो, आइए उस पर नजर डालें। श्लोक छह, आरंभ में कहता है, मजबूत और साहसी बनो क्योंकि तुम इन लोगों को उस देश का अधिकारी बनाओगे जिसे देने के लिए मैंने तुम्हारे पूर्वजों से शपथ खाई थी।

तो, फिर से, विरासत और वादों को पूरा करने का यह विचार है। और फिर श्लोक नौ भी कुछ ऐसा ही कहता है। क्या मैंने तुम्हें बलवन्त और साहसी बनने की आज्ञा नहीं दी? मत डरो, निराश मत हो, क्योंकि जहां कहीं तुम जाओगे वहां तुम्हारा परमेश्वर यहीवा तुम्हारे साथ रहेगा।

तो, आप स्पष्ट रूप से सैन्य संदर्भ के प्रकार के संदर्भ में इसके बारे में सोच सकते हैं। यह इज़राइल और जोशुआ के लिए एक बड़ी चुनौती है। और इसलिए इन लड़ाइयों में जाने के लिए कुछ हद तक शारीरिक साहस की आवश्यकता होती है।

लेकिन मुझे लगता है कि यह दिलचस्प है कि जोशुआ के इस पूरे आरोप में, भगवान वास्तव में उसे कोई सैन्य सलाह नहीं देते हैं। वह यह नहीं कहते कि यहां जाओ और लोगों को छह महीने तक प्रशिक्षित करो और यह सुनिश्चित करो कि तुममें यह लड़ाकू शक्ति विकसित हो। यहां सैन्य रणनीति है, यहां जाने लायक जगहें हैं।

इन सभी मजबूत, मजबूत और साहसी शब्दों के साथ यहां इस उपदेश का हृदय श्लोक सात और आठ में है। और श्लोक सात और आठ में सैन्य मुद्दों का बिल्कुल भी उल्लेख नहीं है। तो, आइए श्लोक सात को देखें।

केवल मजबूत और बहुत साहसी बनो। और कुछ मायनों में, हम यह तर्क दे सकते हैं कि इसका मतलब है मजबूत और बहुत दृढ़ रहें, जो काम मैं आपको यहां दे रहा हूं उसे डगमगाए बिना करते रहें। और इन श्लोकों में कार्य सेना नहीं है।

बल्कि, यह क्या है? केवल मजबूत और बहुत साहसी बनो। पद सात, जो जो व्यवस्था मेरे दास मूसा ने तुझे दी है उन सभी के अनुसार करने में चौकसी करना। इतना दिलचस्प कि जोशुआ का साहस या दृढ़ता, कम से कम यहाँ, कानून का पालन करने से जुड़ी है, कनानियों का सामना करने से नहीं।

स्पष्ट बात यह है कि यदि वह उस कानून का आज्ञाकारी है जो पहले दिया गया था, तो भगवान उसे उन सैन्य प्रयासों में सफलता देंगे जिनका वह सामना करेगा। श्लोक सात के आगे बढ़ते हुए दाएँ या बाएँ न मुड़ना ताकि जहाँ भी तुम जाओ वहाँ तुम्हें अच्छी सफलता मिले। और फिर उसी बात को दोहराते हुए, पद आठ, व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे मुँह से न उतरेगी, परन्तु दिन रात इस पर ध्यान किया करते रहना, कि जो कुछ लिखा है उसके अनुसार करने में चौकसी करना। इस में।

क्योंकि तब तुम अपना मार्ग सुफल बनाओगे। तो आपको अच्छी सफलता मिलेगी। तो, आप लगभग कल्पना कर सकते हैं, मनोवैज्ञानिक रूप से, जोशुआ तैयार है और जाने के लिए तैयार है और सोच रहा है, यहाँ सभी कनानियों को हमें हराने के लिए मिला है।

और सोच में पड़ गया कि भगवान को यहां सैन्य सलाह और रणनीतियां कब मिलेंगी? और वह ऐसा बिल्कुल नहीं करता। यह सब मैंने तुम्हें जो आदेश दिया है उसके प्रति वफादार रहना है और मैं बाकी का ध्यान रखूंगा। कुछ मायनों में, यह वृत्तांत यहाँ और फिर अध्याय एक से पाँच तक मुझे यीशु के शब्दों की याद दिलाता है जहाँ उन्होंने कहा था, पहले परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की तलाश करो और ये सभी अन्य चीजें तुम्हारे साथ जोड़ दी जाएंगी।

इसलिए, यदि यहोशू वह कर रहा है जो उसे करना चाहिए, और यदि लोग अपना रास्ता तैयार कर रहे हैं, और अध्याय पांच में, वे फसल मनाते हैं, तो उनका खतना किया जाता है, और वे कार्य के लिए तैयार हो जाते हैं। यदि वे भगवान के साथ सही हैं, तो भगवान श्रेय और जीत देंगे। यह सैन्य रणनीति की बारीकियों के बारे में चिंता करने से अधिक महत्वपूर्ण है।

हम एक अलग खंड में इस बारे में बात करेंगे कि यह ईश्वरीय नेतृत्व के एक बड़े विषय के साथ कैसे फिट बैठता है जो कि ईश्वर के पास मौजूद राजाओं की सफलता की कुंजी तक जाता है। तो, हम किसी अन्य बिंदु पर इस पर वापस आएंगे। मैं कुछ समय लेना चाहता हूँ और इन छंदों में समृद्धि और अच्छी सफलता के मुद्दे पर बात करना चाहता हूँ।

अध्याय एक, श्लोक सात, अंत में कहता है, दाएँ या बाएँ मत हटो ताकि जहाँ भी तुम जाओ, तुम्हें अच्छी सफलता मिले, और फिर श्लोक आठ में कहा गया है, तब तुम अपना मार्ग समृद्ध बनाओगे और तुम्हारे पास होगा अच्छी सफलता। ईसाइयों के कुछ समूह हैं जिन्होंने यहां और अन्य जगहों पर इस तरह के छंद लिए हैं, उदाहरण के लिए भजन एक, धर्मी पानी की धाराओं के किनारे लगाए गए पेड़ की तरह हैं और वह जो कुछ भी करेगा वह अन्य स्थानों पर समृद्ध होगा। और उन्होंने इन छंदों को, मैं कहूँगा, संदर्भ से बाहर ले लिया है और व्याख्या के संदर्भ में उनके साथ चलते हैं कि भगवान के एक सच्चे अनुयायी को भौतिक सफलता मिलेगी और अनिवार्य रूप से भौतिक धन और धन की ओर प्रयास करना चाहिए।

और यदि आप आर्थिक रूप से सफल नहीं हो रहे हैं, तो आप ईश्वर की इच्छा में नहीं हैं। और यदि आप इसे देख रहे हैं, तो आप न केवल यहां परिचित होंगे बल्कि दुनिया के अन्य हिस्सों में भी मैंने पाया है कि इस प्रकार का उपदेश दिया जाता है। टेलीविजन और रेडियो मंत्रालय और अन्य इसी तरह की चीजों के इर्द-गिर्द बने हैं।

और मैं कहूँगा कि यह बाइबिल की शिक्षा का विरूपण है। ऐसे कई अन्य मार्ग हैं जो अलग-अलग दिशाओं की ओर इशारा करते हैं। और नंबर एक, नंबर दो, यह वास्तव में इस अध्याय में शब्दों की गलतफहमी को दर्शाता है।

तो चलिए मैं इसके बारे में कुछ बातें कहना चाहता हूँ। मैं आपको धर्मग्रंथ के कुछ अन्य हिस्सों की याद दिलाकर शुरुआत करना चाहता हूँ जो हमें चीजों का एक अलग पक्ष दिखाते हैं। इसलिए, उदाहरण के लिए, नीतिवचन 23 में, आप स्वयं ही इसकी ओर रुख कर सकते हैं, लेकिन नीतिवचन 23 श्लोक चार और पांच यह कहते हैं, अमीर बनने के लिए अपने आप को थकाओ मत।

संयम बरतने की बुद्धि रखें. एक नजर दौलत पर डालो. और वे चले गए क्योंकि वे निश्चित रूप से पंख उगेंगे और आकाश में उड़ जाएंगे।

धन-दौलत क्षणभंगुर है. और आपको उस अमीर आदमी के बारे में यीशु का दृष्टांत याद है जिसने अपनी सारी संपत्ति रखने के लिए खलिहान बनाए और फिर वह मर गया और उसे अपने साथ नहीं ले जा सका। धर्मग्रंथ में मेरे पसंदीदा छंदों में से एक, नीतिवचन तीन के अंश, छंद सात से नौ तक, यह कहता है: "हे प्रभु, मैं आपसे दो चीजें मांगता हूँ, मरने से पहले मुझे मना न करें।" नंबर एक, "झूठ और झूठ को मुझसे दूर रखो।" और नंबर दो, "मुझे न तो गरीबी दो और न ही अमीरी, बल्कि मुझे केवल मेरी प्रतिदिन की रोटी दो।"

कैसी प्रार्थना है. मुझे न तो गरीबी दो और न ही अमीरी। वह उसका कारण बताता है, "अन्यथा मेरे पास बहुत अधिक हो जाए और मैं तुम्हें अस्वीकार करूँ और कहूँ, प्रभु कौन है?" यदि मेरे पास बहुत अधिक धन है, तो मैं आत्म-संतुष्ट और आत्म-संतुष्ट महसूस करूँगा।

वर्षों पहले, मैं शिकागो क्षेत्र में ट्रिनिटी डिवाइनिटी स्कूल में पढ़ा रहा था और ट्रिनिटी उत्तरी उपनगरों में एक बहुत समृद्ध क्षेत्र में स्थित है। और मैं एक बहुत ही विशिष्ट उपनगर में संडे स्कूल की कक्षा में पढ़ा रहा था। और मुझे पता चला कि उस चर्च में लगभग हर कोई उस उपनगर में नहीं रहता था।

वे काफी अन्य क्षेत्रों से आये थे। और उन्होंने हमें बताया कि इसका कारण यह था कि उस उपनगर में हर कोई इतना अमीर था कि उन्हें लगता था कि उन्हें धर्म या भगवान की कोई ज़रूरत नहीं है। वे स्व-निर्मित करोड़पति, अरबपति थे। और यह देखना एक दुखद बात थी।

तो, नीतिवचन 30 पद 9 कहता है, "नहीं तो मेरे पास बहुत कुछ हो जाए, और तुझ से इन्कार करूँ और कहूँ, प्रभु कहाँ है?" या दूसरी ओर, मैं गरीब हो जाऊँगा और चोरी करूँगा और इस प्रकार अपने परमेश्वर के नाम का अनादर करूँगा।" इसलिए, नीतिवचन में प्रार्थना यह है कि बीच का रास्ता अपनाएं, धन की इच्छा न करें, निश्चित रूप से जब वे बहुत गरीब हों तो चोरी करने के लिए प्रलोभित न हों।

तो मैं कहूँगा कि यह एक अद्भुत संतुलित प्रार्थना है। दूसरे, जोशुआ में समृद्ध होने और अच्छी सफलता पाने के शब्द पुराने नियम में दर्जनों बार आते हैं। और वे 50-कुछ बार एक साथ घटित होते हैं।

मैंने टिप्पणी लिखने की प्रक्रिया में एक अध्ययन किया और पाया कि किसी भी स्थिति में ये शब्द वित्तीय समृद्धि का उल्लेख नहीं करते हैं। यह लगभग हमेशा ईश्वर की कृपा और उपस्थिति के कारण किसी के प्रयासों में सफलता या समृद्धि को संदर्भित करता है। पड़ोसियों के साथ रिश्ते में सफलता, भगवान के साथ रिश्ते में सफलता।

उदाहरण के लिए, उत्पत्ति 24 में इब्राहीम के सेवक को पत्नी खोजने के उसके मिशन में ईश्वर द्वारा सफलता दी गई है। वह पैसे की तलाश में नहीं है, वह बस कुछ खोजने की कोशिश कर रहा

है। यूसुफ पोतीपर के घराने में सफल हुआ क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था, वहाँ भी यही शब्द प्रयोग किया गया था।

यिर्मयाह दुष्टों के समृद्ध न होने के बारे में कई बार बोलता है। और वह वित्त की बात नहीं कर रहा है, बल्कि अपने बुरे इरादों में सफल नहीं होने या सफल नहीं होने की बात कर रहा है। इसलिए उनका इरादा बुरा करने का था, लेकिन वे उसमें सफल नहीं हुए।

तो वास्तव में ये शब्द किसी भी तरह से भौतिक समृद्धि का जिक्र नहीं कर रहे हैं। और इसलिए जो लोग ऐसा निर्माण करेंगे जिसे कभी-कभी समृद्धि का सुसमाचार या स्वास्थ्य और धन का सुसमाचार कहा जाता है, मुझे लगता है कि वे इसे झूठी नींव पर बना रहे हैं। ग़लतफ़हमी, यदि इन शब्दों के अर्थ और पवित्रशास्त्र के अन्य भागों की शिक्षा का जानबूझकर विरूपण नहीं है।

इसलिए, यहोशू को दिया गया परमेश्वर का आदेश पुस्तक को शुरू करने का एक महत्वपूर्ण तरीका है और यह आने वाली चीजों के लिए मंच तैयार करता है। शेष अध्याय में जोशुआ जनजातियों के साथ बातचीत करता है।